

संपादकीय विद्यार्थियों के लिए फिटनेस कार्यक्रम जरूरी

जमीनी हालात एनडीए
के अनुकूल नहीं है....

A group of children wearing orange vests are playing football on a grassy field. One child in a green shirt is kicking the ball towards the camera. The background shows a blurred view of the stadium and spectators.

लालू प्रसाद और तेजस्वी यादव के इतना कुछ करने के बावजूद बिहार में अब भी उम्मीद है। जमीनी हालात एनडीए के अनुकूल नहीं दिख रहे हैं। नरेंद्र मोदी की लहर या अयोध्या की राम लहर का ज्यादा असर नहीं दिख रहा है। यही कारण है कि मतदाता किसी लहर से प्रभावित होकर या भावनात्मक मुद्दे के असर में बोट डालने की मंशा नहीं जाहिर कर रहे हैं। ध्यान रहे पिछली बार के चुनाव में राज्य की 40 में से 39 सीटें एनडीए को मिली थीं। भाजपा 17 सीटों पर लड़ी थी और सभी सीटों पर जीती थी। एक सीट सिर्फ नीतीश की पार्टी हारी थी। रामविलास पासवान की पार्टी भी अपने कोटे की छह सीटों पर जीत गई थी। इस बार हर कोई मान रहा है कि सीटें कम होंगी। जनता दल यू को ज्यादा नुकसान की संभावना जताई जा रही है। इसका कारण यह भी है कि इस बार भाजपा को रोकने के विपक्षी अभियान की शुरुआत बिहार से ही हुई थी। लोकसभा चुनाव की तैयारियों के साथ विपक्षी गठबंधन बनाने के जब प्रयास शुरू हुए तो सबसे पहले बिहार के ही नेताओं ने कहा था कि अगर 50 सीटें कम कर दी जाएं तो मोदी सरकार बहुमत गंवा देगी। तब नीतीश कुमार विपक्षी गठबंधन बनाने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने और उनकी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने कहा था कि यह तो नंबर का खेल है और इस बार विपक्ष मोदी के नंबरस कम कर देगा। उसके बाद ही आंकड़ों के खेल शुरू हुआ कि कहां से कितनी सीटें कम हो सकती हैं। नंबरस के इस खेल में बिहार हमेशा अहम रहा। बिहार के अलावा बड़े राज्यों में कर्नाटक और महाराष्ट्र में भाजपा के नंबरस कम होने की संभावना तभी से देखी जा रही है। भाजपा और नरेंद्र मोदी को हरा कर सत्ता से बाहर कर देने के बरक्स यह एक दूसरा नैरेटिव था कि उसकी 40-50 सीटें कम कर दी जाएं। यह नैरेटिव बनने के बाद मोदी को समझ में आया कि ऐसा हो सकता है। तभी सबसे पहले यह सिद्धांत प्रतिपादित करने वाले नीतीश कुमार को तोड़ने का प्रयास शुरू हुआ। उनकी पार्टी के नेताओं पर दबाव डाल कर या करीबी कारोबारियों पर कार्रवाई के जरिए भाजपा कामयाब हो गई। उसने नीतीश को फिर से गठबंधन में शामिल कर लिया।

विकास होता है। आज के विद्यार्थी को अगर कल का अच्छा नागरिक बनाना है तो हमें उसके लिए सही फिटनेस कार्यक्रम भी देना होगा वर्षों से स्कूली स्तर पर फिटनेस कार्यक्रम शुरू करने की बात इस कॉलम के माध्यम से हो रही है, मगर हिमाचल प्रदेश का कोई भी सरकारी या निजी स्कूल अपने यहां फिटनेस कार्यक्रम लागू करने में नाकाम रहा है। कई बार नए शिक्षा सत्र शुरू होकर खत्म हो गए, मगर फिटनेस कार्यक्रम कहीं भी शुरू नहीं हो पाया है। मगर इस वर्ष हिमाचल प्रदेश सरकार ने राज्य के विद्यालयों में विद्यार्थियों की सामाज्य फिटनेस के लिए पहले की तरह अनिवार्य रूप से ड्रिल के पीरियड का प्रावधान किया है। शिक्षण विषयों के रिपोर्ट कार्ड की तरह स्वास्थ्य के मानकों का रिपोर्ट कार्ड भी प्रत्येक विद्यार्थी का हर स्कूल में अनिवार्य रूप से हो, क्योंकि भाषा व अन्य शिक्षण विषयों की तरह ही स्वास्थ्य के मूल संतंभ स्पीड, सट्रेंथ, इडोरेंस व लचक आदि का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी उसी उम्र में शुरू करना होता है। शिक्षण विषयों के लिए तो स्कूलों के पास शिक्षक सहित पूरा प्रबंध है, मगर स्वास्थ्य के घटकों को विकसित करके उनका मूल्यांकन करने की कोई भी सुविधा आज तक उपलब्ध नहीं हो पाई है। इस कॉलम के माध्यम से कई बार इस विषय पर स्कूलों व अधिभावकों को चेताया जा चुका है, मगर कोई भी समझने के लिए तैयार नहीं है। किसी भी देश को इतनी क्षति युद्ध या महामारी से नहीं होती है, जितनी तबाही नशे के कारण हो सकती है। आज जब देश के अन्य राज्यों सहित हिमाचल प्रदेश में भी नशा युवा वर्ग पर ही

ढांचा होना वहां के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का प्रमुख कारण रहा था। बाद में जब पंजाब धीरे-धीरे खेलों से दूर हुआ तो पहले वहां आतंकवाद और फिर आजकल पंजाब नशे का अड्डा बना हुआ है। यही कारण है कि हर क्षेत्र में आज हरियाणा पंजाब से काफी आगे निकल गया है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने एशियाई, राष्ट्रमंडल व ओलंपिक खेलों में पदक विजेता होने पर खिलाड़ियों को करोड़ों रुपए के नगद इनाम व सम्मानजनक नौकरी देकर हरियाणा में खेलों के लिए बहुत ही उपयुक्त विकास की बात मजाक लगती है। आज के विद्यार्थी के लिए विद्यालय या घर पर आधे घंटे के फिटनेस कार्यक्रम की सख्त जरूरत है। इसमें 15 से 20 मिनट धीरे-धीरे दौड़ना तथा विभिन्न कोणों पर शरीर के जोड़ों की विभिन्न क्रियाओं को पूरा करने के बाद शरीर को कूलडाऊन करना होगा। कम से कम बीस मिनटों तक तेज चलने, दौड़ने व शारीरिक क्रियाओं के करने से रक्त वाहिकाओं में रक्त संचार तेज हो जाता है। उससे हर मसल को उपयुक्त मात्रा में प्राणवायु मिलने से उसका समुचित विकास होता है। आज के विद्यार्थी को अगर कल का

अच्छा नागरिक बनाना है तो हमें स्कूली पाठ्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ उसके लिए सही फिटनेस कार्यक्रम भी देना होगा। तभी हम सही अर्थों में अपनी अगली पीढ़ी को रक्षित कर सकते हैं। हिमाचल प्रदेश की अधिकांश आबादी गांव में रहती थी। वहां पर सवेरे-शाम वर्षों पहले विद्यार्थी अपने अभिभावकों के साथ कृषि व अन्य घरेलू कार्यों में सहायता करते थे। आज विद्यालय आने-जाने के लिए कई किलोमीटर दिन में पैदल चलता था। इसलिए उस समय के विद्यार्थी को किसी भी प्रकार के फिटनेस कार्यक्रम की कोई जरूरत नहीं थी। आज का विद्यार्थी घर के आंगन में बस पर सवार होकर विद्यालय के प्रांगण में उतरता है। पढ़ाई के नाम पर ज्यादा समय खर्च करने के कारण फिटनेस के लिए कोई समय नहीं बचता है। अधिकांश स्कूलों के पास फिटनेस के लिए न तो आधारभूत ढांचा है और न ही कोई कार्यक्रम है। आज का विद्यार्थी फिटनेस व मनोरंजन के नाम पर दूरसंचार माध्यमों का कमरे में बैठ कर खूब दुरुपयोग कर रहा है। ऐसे में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की बात मजाक लगती है। आज के विद्यार्थी के लिए विद्यालय या घर पर आधे घंटे के फिटनेस कार्यक्रम की तैयारी जरूरत है। इसमें 15 से 20 मिनट धीरे-धीरे दौड़ना तथा विभिन्न कोणों पर शरीर के जोड़ों की विभिन्न क्रियाओं को पूरा करने के बाद शरीर को कूलडाऊन करना होगा। कम से कम बीस मिनटों तक तेज चलने, दौड़ने व शारीरिक क्रियाओं के करने से रक्त वाहिकाओं में रक्त संचार तेज हो जाता है। उससे हर मसल को उपयुक्त मात्रा में प्राणवायु मिलने से उसका समुचित विकास होता है। आज के विद्यार्थी को अगर कल का



भूपिंदर सिंह

कम से कम बीस मिनटों तक तेज चलने, दौड़ने व शारीरिक क्रियाओं के करने से रक्त वाहिकाओं में रक्त संचार तेज हो जाता है। उससे हर मसल को उपयुक्त मात्रा में प्राणवायु मिलने से उसका समुचित विकास होता है। आज के विद्यार्थी को अगर कल का अच्छा नागरिक बनाना है तो हमें उसके लिए सही फिटनेस कार्यक्रम भी देना होगा वर्षों से स्कूली स्तर पर फिटनेस कार्यक्रम शुरू करने की बात इस कॉलेज के माध्यम से हो रही है मगर हिमाचल प्रदेश का

कोई भी सरकारी या निजी स्कूल अपने यहां पिटनेस कार्यक्रम लागू करने में नाकाम रहा है। कई बार नए शिक्षा सत्र शुरू होकर खत्म हो गए, मगर पिटनेस कार्यक्रम कहाँ भी शुरू नहीं हो पाया है। मगर इस वर्ष हिमाचल प्रदेश सरकार ने राज्य के विद्यालयों में विद्यार्थियों की सामान्य पिटनेस के लिए पहले की तरह अनिवार्य रूप से डिल के पीरियड का प्रावधान किया है। शिक्षण विषयों के रिपोर्ट कार्ड की तरह स्वास्थ्य के मानकों का रिपोर्ट कार्ड भी प्रत्येक विद्यार्थी का हर स्कूल में अनिवार्य रूप से हो, क्योंकि भाषा व अन्य शिक्षण विषयों की तरह ही स्वास्थ्य के मूल स्तंभ स्पीड, स्ट्रेंथ, इडोरेंस व लचक आदि का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी उसी उम्र में शुरू करना होता है। शिक्षण विषयों के लिए तो स्कूलों के पास शिक्षक सहित पूरा प्रबंध है, मगर स्वास्थ्य के घटकों को विकसित करके उनका मूल्यांकन करने की कोई भी सुविधा आज तक उपलब्ध नहीं हो पाई है। इस कॉलम के माध्यम से कई बार इस विषय पर स्कूलों व अभिभावकों को चेताया जा चुका है, मगर कोई भी समझने के लिए तैयार नहीं है। किसी भी देश को इतनी क्षति युद्ध या महामारी से नहीं होती है, जितनी तबाही नशे के कारण हो सकती है। आज जब देश के अन्य राज्यों सहित हिमाचल प्रदेश में भी नशा युवा वर्ग पर ही नहीं किशोरों तक चरस, अपीम, स्मैक, नशीली

दवाओं तथा दूरसंचार के माध्यमों के दुरुपयोग से शिकंजा कस रहा है, इसलिए सरकार, स्कूल प्रबंधन व अधिकारकों को इस विषय पर जरूरी कदम जल्दी ही उठा लेने चाहिए। यदि विद्यार्थी किशोरावस्था में नशे से बच जाता है तो वह फिर युवावस्था आते-आते समझदार हो गया होता है। माध्यमिक से वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न विधाओं में व्यस्त रखने के साथ-साथ शारीरिक फिटनेस की तरफ मोड़ना बेहद जरूरी हो जाता है। मानव का सर्वांगीण विकास शिक्षा के बिना अधूरा है। शिक्षा की परिभाषा में साफ-साफ लिखा है कि यहां शारीरिक व मानसिक दोनों तरह से बराबर विद्यार्थियों का विकास करना है जिससे वे आगे चलकर जीवन को सफलतापूर्वक खुशहाल जी सकें। शारीरिक विकास के लिए खेलों के माध्यम से फिटनेस कार्यक्रम बहुत जरूरी हो जाता है। खेल ही वह माध्यम है जिसके द्वारा विद्यार्थी को नशे से दूर रखा जा सकता है। पड़ोसी राज्य पंजाब एक समय तरकी में देश का अग्रणी राज्य रहा है। खेलों में उत्कृष्टता उस प्रदेश की तरकी व खुशहाली का भी पैमाना होती है। पंजाब में हजारों प्रशिक्षक विभिन्न खेलों में खेल प्रशिक्षण के लिए नियुक्त होने के साथ-साथ खेल प्रशिक्षण के लिए आधारभूत

A young Indian boy in a green bib and blue shirt is playing kabaddi on a dirt court. He is in a crouched position, ready to move. A white and green ball is visible on the ground in front of him. The background shows a blurred stadium setting.

देश के अग्रणी राज्यों में गिना जाता है। पिछले कुछ दशकों से हिमाचल प्रदेश के नागरिकों की फिटनेस में बहुत कमी आई है। इसका प्रमुख कारण विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के लिए किसी भी प्रकार के फिटनेस कार्यक्रम का न होना है। रड़े वाली पढ़ाई की होड़ में हम विद्यार्थियों की फिटनेस को ही भूल गए हैं। हिमाचल प्रदेश की अधिकांश आबादी गांव में रहती थी। वहां पर सवरे-शाम वर्षे पहले विद्यार्थी अपने अभिभावकों के साथ कृषि व अन्य घरेलू कार्यों में सहायता करते थे। छात्र विद्यालय आने-जाने के लिए कई किलोमीटर दिन में पैदल चलता था। इसलिए उस समय के विद्यार्थी को किसी भी प्रकार के फिटनेस कार्यक्रम की कोई जरूरत नहीं थी। आज का विद्यार्थी घर के आंगन में बस पर सवार होकर विद्यालय के प्रांगण में उतरता है। पढ़ाई के नाम पर ज्यादा समय खर्च करने के कारण फिटनेस के लिए कोई समय नहीं बचता है। अधिकांश स्कूलों के पास फिटनेस के लिए न तो आधारभूत ढांचा है और न ही कोई कार्यक्रम है। आज का विद्यार्थी फिटनेस व मनोरंजन के नाम पर दूरसंचार माध्यमों का कमरे में बैठ कर खूब दुरुप्योग कर रहा है। ऐसे में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की बात मजाक लगती है। आज के विद्यार्थी के लिए विद्यालय या घर पर आधे घंटे के फिटनेस कार्यक्रम की सख्त जरूरत है। इसमें 15 से 20 मिनट धीरे-धीरे दौड़ना तथा विभिन्न कोणों पर शरीर के जोड़ों की विभिन्न क्रियाओं को पूरा करने के बाद शरीर को कूलडाऊन करना होगा। कम से कम बीस मिनटों तक तेज चलने, दौड़ने व शारीरिक क्रियाओं के करने से रक्त वाहिकाओं में रक्त संचार तेज हो जाता है। उससे हर मसल को उपयुक्त मात्रा में प्राणवायु मिलने से उसका समुचित विकास होता है। आज के विद्यार्थी को अगर कल का अच्छा नागरिक बनाना है। तो हमें स्कूली पाठ्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ उसके लिए सही फिटनेस कार्यक्रम भी देना होगा। तभी हम सही अर्थों में अपनी अगली पीढ़ी को संपूर्ण शिक्षित कर सकते हैं।

विचार

वोटर वैरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल पर्चियों की पूरी गिनती की मांग



नवरात्रि पर्व चिंतन आलेख-मुरझाती नहीं है बेटियां...

विष्णु को वेदना भूल जाती है बाटया

बेटी जो जन्म के बीस पच्चीस बरस मायके में बिताती है। ए सुनते सुनते कि बेटियां तो पराया धन होती हैं, दुर्भाग्य है कि विवाह उपरांत उन्हीं बेटियों को ससुराल में भी जीवन भर पराया कहा जाता है स्मरण कीजिए एक पौधे को मिट्टी से गमले में या गमले से मिट्टी में जब रोपा जाता है तो वह स्थान परिवर्तन की पीड़ा में मुरझा जाता है। वहीं बीस पच्चीस वर्षों तक मायके में पली बढ़ी बेटियां अपनी मिट्टी, अपना घर- परिवार, गांव- शहर अपनी सखी सहेलियों को छोड़कर समस्त पुराने रिश्तों के विछोह की वेदना को भूलाकर सदा सदा के लिए ससुराल में जा बसती है।

पर्कियों में व्यक्त किया है -- हल्दी- कुमकुम, मेंहदी- सिंदूर का अवतार न होता न होती बहिन- बेटियां तो रंक्षाबंधन- भाईदूज तीज का त्यौहार न होता।

जीती-जागती देवी हैं बेटी

आजकल बदलते वक्त के साथ इस प्राचीन परंपरा में बड़ी विकृति दिखाई दे रही है। समाज में बेटी- बेटा के मध्य बड़ा ही भेदभाव का बोल बाला दिखाई दे रहा है। बेटे होने की खुशी में जश्न मनाते हैं, किंतु जब बेटी जन्म लेती है तो ज्यादातर लोगों का मंड़ पैसे लटक जाता है जैसे उन्हें सांप ने संघे है। उसे जलाकर मार डालने जैसा अकल्पनीय कृत्य किया जाता है। अनेक गांव में नारी जाति को डायन- टोनही कह कर मारा- पीटा जाता है ऐसी नासमझी और मूर्खतापूर्ण कदम उठाने वालों को यह सोचना चाहिए कि ऐसा करके वे लोग गांव घर की जीवित देवी का घोर अपमान कर रहे हैं। ऐसे ही कई अज्ञानी लोग अपना पाप धोने के लिए वर्ष में केवल दो बार नवरात्रि के पावन पर्व पर कन्या भोजन करवाते हैं। वे भूल जाते हैं कि घर परिवार की जीती जागती देवी का तिरस्कार करने वाले दुर्जनों को मां दुर्गा कभी भी क्षमा नहीं करेगी। हमारे समाज में कई ऐसी घटनाएं भी उत्तापर हो रही हैं

वहां भी अगर बेटी को माता-पिता की थोड़ी भी अकुशलता का समाचार मिलता है तो वह मायके जाने को मछली की भाँति तड़फउत्तरी है हमारे वेद पुराण इतिहास, और चिंतक चीख चीख कर बता रहे हैं कि बेटों की तूलना में बेटियां कम ज्ञानी नहीं होती। हमारे हरेक पर्व हमारी परम्पराएं बेटियों पर केंद्रित हैं। बेटियों की घटती संख्या के कारण समाज में अनेक शिष्टे-नाते, त्योहार समाप्ति प्राय हो चलते हैं। इस विषय पर गंभीर चिंतन मनन करने नवरात्रि पर्व फिर आया है इस पर्व पर देवी की पूजा में लीन देवी भक्तों से यही कहना है कि रोते बिलखते परिवार को बिटिया हंसा देती है। इसीलिए वे देवी की वरदान होती हैं, अतः बेटियों का मान देवियों के मानिंद ही न तु उस रात का है, वर उह रात है जब बांट लिया हो। ऐसी भयावह घटना भी सामने आ रही है कि आधुनिकता के साथ चिकित्सा विज्ञान में हुई प्रगति का दुरुप्योग करते हुए अनेक चिकित्सक और दम्पत्ति मिलकर कोख में पल रही कन्या भूरण की निर्मम हत्या कर दे रहे हैं। ऐसी क्षरुरातपूर्ण हरकत करते समय इंसान भूल जाता है कि घर में आती हुई लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की जघन्य हत्या करके महापाप का भागीदार अपने ही हाथों अपने सिर मोल ले रहा है। ऐसे धृणित कृत्य को करने वाला इंसान ईमानदारी से अपने हृदय में हाथ रखकर अपनी आत्मा से पूछे कि कन्या भूरण हत्या' करने वाले मनुष्य की पूजा का मान क्या मां दुर्गा स्वीकार करेगी? इस सवाल का सीधा-सीधा जब बेटों ने माता पिता की जमीन जायदाद को बांट लिया और फिर मुंह केर लिया। इसके विपरीत फुटी कौड़ी की आस किए बिना भी बेटियों ने अपने माता-पिता के दुख दर्द को अपना दुख दर्द समझा। बेटियों की ऐसी महिमा को व्यक्त करते कवित्री ने लिखा है कि- फूल सी नाजुक होती है बेटियों, स्पर्श हो खुरदुरा तो रोती है बेटियां रौशन करेगा बेटा तो एक ही कुल को, पर दो दो कुल की लाज को सवारंती है बेटियों।

विजय मिश्रा 'अमित' पूर्व
अति महाप्रबंधक (जन)

ਪੰਜਾਬ ਮੈਂ ਅਕਾਲੀ-ਭਾਜਪਾ ਗਠਬੰਧਨ ਟੁਟਾ

કુલદીપ ચંદ અહિનહોત્રી

दरअसल अकाली दल की दुविधा यह है कि वह सिख समुदाय को एक विशिष्ट राजनीतिक ईकाई के तौर पर देखता है। उसे लगता है कि जो सिख अकाली दल के साथ है, वह तो सिख है, लेकिन जो सिख कम्युनिस्ट पार्टी, कांग्रेस पार्टी, आम आदमी पार्टी, भारतीय जनता पार्टी या समाजवादी पार्टी के साथ है, वह सिख नहीं है पंजाब में अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी लम्बे अरसे से मिल कर चुनाव लड़ने के आदी हो गए थे। इतिहास में देखा जाए तो मिलने-टूटने का यह सिलसिला 1967 के विधानसभा चुनावों के बाद ही शुरू हो गया था। बीच-बीच में मन-मुटाब भी हुआ लेकिन अब पिछले तीन दशकों से आपसी गठबन्धन ठीक-ठाक ही चल रहा था। किसान आन्दोलन से घबरा कर अकाली दल ने भाजपा से संबंध तोड़ लिया। अकाली दल को लगा कि पंजाब भाजपा के खिलाफ किसान आन्दोलन के नेताओं के साथ हो लिया है। ऐसी स्थिति में भाजपा के खिलाफखड़ा होना हाराकिरी करने के समान होगा। लेकिन अकाली दल का आकलन कम से कम इस मुद्दे पर गलत था कि पंजाब किसान नेताओं के साथ है। 2022 के विधानसभा चुनावों में किसान आन्दोलन में से उपजी नई पार्टी संयुक्त किसान मोर्चा के सभी लोगों की जमानत जब्त हो गई। दरअसल किसान मोर्चा एक बहुत ही कुशल रणनीति और मैनेजमेंट के कौशल में से पैदा हुआ था। इस कौशल ने शून्य तो उत्पन्न करने की कोशिश की, लेकिन इस कौशल के नेताओं को जन नेता नहीं बना सका। केरीवाल को कुछ देसी विदेशी शक्तियां 2014 में से ही राष्ट्रीय रंगमंच पर लाँच करने का प्रयास करती रही थीं। अलबत्ता वहां तो सफलता नहीं मिली, लेकिन पंजाब में जरूर सफलता मिल गई। वैसे भी किसान आन्दोलन में सक्रिय कम्युनिस्ट कैडर ने आम आदमी पार्टी की सहायता की थी। भारतीय जनता पार्टी वोटों



और सीटों के मामले में वहीं पहुंच गई जहां वह अकाली दल से गठबन्धन से पूर्व हुआ करती थी। वोट प्रतिशत लगभग छह सात के बीच और सीटें शून्य से आठ के बीच। वैसे इस चुनाव में भाजपा को दो सीटें और 6.6 फीसदी वोट मिले थे। सबसे ज्यादा नुकसान अकाली दल को हुआ। सीटें तीन। जहां तक वोट प्रतिशत का सवाल है अकाली दल को 18.38 प्रतिशत वोट मिले थे। लेकिन सबसे ज्यादा लाभ आम आदमी पार्टी को हुआ जिसने 117 सदस्यों की विधानसभा में से 92 सीटें झटक लीं। इस नए राजनीतिक माहौल में कांग्रेस और अकाली दल में भगदड़ मचना लाजिमी थी। लेकिन आश्वर्य की बात थी कि कांग्रेस और अकाली दल छोड़ कर लोग भाजपा में आने लगे और कुछ महीने पहले तक एक बार फिर अकाली-भाजपा गठबन्धन की चर्चा चल निकली। इसलिए जल्दी में फिर से एक लघु किसान आन्दोलन खड़ा हो गया। अकाली दल फिर घबराहट में आ गया। दरअसल पंजाब में किसान आन्दोलन अकाली दल को डराने-हड़काने का एक कारण हथियार बन चुका है। अकाली दल इसको देख बर कैसी ही प्रतिक्रिया करता है जैसी किसान आन्दोलन के आयोजकों को आशा होती है। कहीं न कहीं इससे पंजाब में शासन कर रही पार्टी की हित साधना भी होती है। कहा जाता है और धरातल पर दिखाई भी देता था कि पिछले किसान आन्दोलन में पंजाब की उस समय की शासक पार्टी की प्रत्यक्ष ही भागीदारी थी और इस बार के किसान आन्दोलन में आम आदमी पार्टी की सक्रिय भागीदारी देखी जा सकती है। परिणाम वहीं हुआ। अकाली दल गठबन्धन की बातचीत से बाहर हो गया। यह ठीक है कि इसमें सीटों की संख्या भी एक मुद्दा रहा होगा लेकिन जिस कारक ने अकाली दल को गठबन्धन के राऊंड टेबल से हड़बड़ाहट में उठा दिया, वह किसान आन्दोलन ही था। इस गठबन्धन की बात सिरे न चढ़ने से सबसे ज्यादा खुशी शायद भाजपा के कार्यकर्ता को ही हो रही है। भाजपा के साधारण कार्यकर्ता को लगता है कि अकाली दल से गठबन्धन के कारण पंजाब में पार्टी का विकास रुकता है। यह ऊपर से देखने पर ठीक लगता है। लेकिन वस्तुस्थित ऐसी नहीं है। दरअसल पंजाब में भूगोल के आधार पर पांच भाग हैं। मालवा, बाँगर, पुआध, दोआबा और माझा। भाजपा का आधार मोटे तौर पर 'पुआध' क्षेत्र के कुछ हिस्सों पर रहता है, जहां उसका मुकाबला अकाली दल से नहीं बिल्कुल कांग्रेस से निर्माण किया जाए और उसमें से नेतृत्व उभरे। यह लम्बा तरीका है और चुनाव सिर पर है। दूसरा तरीका है कि पंजाब की जनसांख्यिकी को ध्यान में रखते हुए उसी के अनुरूप नेतृत्व खड़ा कर लिया जाए और उसकी सहायता से कैंडर निर्माण किया जाए। फिलहाल पंजाब में भाजपा ने यह दूसरा तरीका ही इस्तेमाल किया है। अन्य दलों से अनेक नेता भाजपा में आ रहे हैं। रवनीत बिंदु नया चेहरा है। लेकिन उससे बहुत पहले कांग्रेस-अकाली दल से आने-जाने का सिलसिला शुरू हो गया था। मनप्रीत सिंह बादल उनमें बड़ा चेहरा था। अकाली दल के बरिष्ठ नेता सिकन्दर सिंह मल्का की पुत्रवधू परमपाल कौर सिद्धू ने तो भारतीय प्रशासनिक सेवा से त्यागपत्र दे दिया है। उसकी चर्चा है कि वह भाजपा में शामिल हो रही है। ऐसे और भी उदाहरण हैं। भाजपा ने अभी जिन सीटों पर अपने प्रत्याशी घोषित किए हैं उनमें गुरदासपुर को छोड़ कर ज्यादा प्रत्याशी वही हैं जो दूसरे दलों को छोड़ कर भाजपा में आए हैं। अमृतसर के तरणजीत सिंह संधू को अपवाद कहा जा सकता है। लेकिन यह भी ध्यान रखना होगा कि इन इलाकों में भाजपा का अपना जनाधार उतना नहीं है कि अपने बलबूत चुनाव की लड़ाई लड़ सके। प्रत्याशी खड़े करने के दो उद्देश्य होते हैं।

संक्षिप्त समाचार

**एसएमसी सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल में
8 से 13 अप्रैल तक निःशुल्क ओपीडी**

रायपुर (विश्व पारवार)। विश्व स्वास्थ्य ट्रेवर्स के उपलक्ष्य में रायपुर के एसएमसी सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल में 8 अप्रैल से 13 अप्रैल तक नि:श्लेष्म



ओपीडी कैप लगाया जा-
रहा है इस कैप में समस्त
विभाग में सीनियर
डॉक्टर्स जैसे डॉक्टर प्रज्ञा
सूर्यवंशी-निःसंतानता
(आईवीएफ/आईयूआई)
विभाग, डॉ वैभव राज
सिंह-जनरल एवं
लप्रोस्कोनिक सर्जरी

विभाग, डॉ करन सराफ-नेफ्रोलॉजी विभाग (किडनी), डॉ घनश्यम सासपर्थी-न्यूरो एवं स्पाइडन सर्जरी विभाग, डॉ. संजय कुमार अग्रवाल-गैस्ट्रोएंटरोलॉजी विभाग (पेट और लिवर की समस्या), डॉ. सौरभ खरे- हड्डी रोग एवं जोड़ प्रत्यारोपण विभाग, डॉ ममता दास- प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग, यूरोलॉजी (मूत्र रोग), जनरल मेडिसिन में पूर्णतः निःशुल्क परामर्श दिया जाएगा। इसके अलावा रायपुर के अन्य प्रसिद्ध डॉक्टर्स की टीम भी अपनी सेवायें देगी। इस अवसर पर फार्मेसी, लैब टेस्ट, एवं रेडियोलॉजी में भी 20 प्रतिशत की विशेष छुट दी जायेगी। मरीज़ आने से पूर्व अपना रजिस्ट्रेशन 9238175001/ 9238175002 में संपर्क कर करवा सकते हैं।

‘पानी है तो जिंदगानी है...', श्रद्धा महिला मंडल द्वारा ‘प्याऊ’ का शुभारंभ किया गया



बिलासपुर (विश्व परिवार)। परहित व जनकल्याण के लिए समर्पित सेवा व सदभाव से अर्पित श्रद्धा महिला मंडल एसईसीएल बिलासपुर की अध्यक्षा श्रीमती पूनम मिश्रा ने अपने सहयोगियों श्रद्धा महिला मंडल की उपाध्याक्षाओं श्रीमती संगीता कापरी, श्रीमती अनीता बी. फ्रेंकलीन, श्रीमती सुजाता खमारी की गरिमामयी उपस्थिति में 'पानी है... तो जिंदगानी है...' को सार्थक करते हुए राहगीरों के लिए इंदिरा विहार, बसंत विहार और नेहरू शताब्दी के चौराहों पर 'प्याऊ' का शुभारंभ दिनांक 8 अप्रैल 2024 को शरकत, चना और गुड़ का वितरण कर किया गया। इन जगहों पर शीतल पेय जल पूरे गर्मी भर उपलब्ध रहेगा। इस लोकोपकारी कार्य में श्रद्धा महिला मंडल की संयुक्त सचिव डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव, मीडिया प्रभारी श्रीमती पूनम सिंह, अपराजिता प्रभारी श्रीमती सालेश्टाइन साहू सहित कमेटी की ऊर्जावान सदस्यायें भी उपस्थित रहीं। 'परोपकाराय पुण्याय' के मंत्र को चरितार्थ करती श्रद्धा महिला मंडल का यह प्रयास समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है।

कलाकारी-अदाकारी की दुनिया में महत्वपूर्ण योदगान जय प्रकाश

रायपर (विश्व परिवार)। छोटी सी उम्र में बड़े से बड़ा काम करने का शौक

रखते हैं जय प्रकाश जी। सुबह 6 बजे से रात 11 बजे तक बिजी रहते हैं अपना
हर समय वो काम पे बिताना पसंद करते हैं। वह राज कुमार कॉलेज में जब करते हैं/ प्लस सिंगर
है/ एक्टर है। डांस क्लास/ संगीत क्लास/ प्लॉबरिंग
और पैटेंटिंग का ठेकेदार भी है। जय प्रकाश वो है जिससे उसका
काम करना और सीखना चाहते हैं जिससे उसका
और उसके परिवार का नाम हो। वैसे तो बहुत सारे
गीत गाये हैं और बहुत से टेली फिल्मों में खुद ही
एक्टर के रूप में कार्य किये हैं। जय प्रकाश जी
बताते हैं कि उनको एकिंग का शैक बचपन से
ही है वो बच्चों को राम लीला ड्रामा और भी बहुत
कुछ कराते और खुद भी करते थे उनका यह अभ्यास आज बहुत की काम और
नामी साबित हुआ। डंगनिया निवासी साहू पारा में रहने वाले जय प्रकाश जी से
बातचीत में पता चला कि वो एक दिन बहुत बड़े फ़िल्म स्टार बनना चाहते हैं
और लोगों को बताना चाहते हैं कि गरीब पैदा होना किश्मत की बात है लेकिन
अमीर बनना अपने हाथ में है वो दिन रात कड़ी मेहनत करके पाई पाई जोड़ कर
बहुत कुछ कर चुके हैं बस एक मौके के तलाश में हैं और वो दिन भी धुर नहीं

फिर एक बार मोदी सरकार बनाने का संकल्प कर चुकी है जनता : भावना बोहरा

राजनांदगांव लोकसभा में भाजपा की जीत तय : विधायक

उत्साहवर्धन भी किया।
इस दौरान भावना बोहरा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी जो वादे करती हैं उसे पूरा करने के लिए समर्पित भी रहती है। छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनते ही 122 दिनों में भीतर रियल इंडिपेंडेंस एटिहासिक कार्यों के जाननी है, 500 वर्षों तक श्रीराम मंदिर का निर्माण की आस्था का सम्पन्न प्रधानमंत्री जी ने किया अभियान लेता हुआ देखा

प्राकृतिक प्रकृति व्याप्ति का दाम ऐसा है जिसका विवरण दंडनीज लॉन्ड नं. 100 दिनों के भारतीय निरतरता एवं तत्परता से जनहित के निर्णय लिए गए हैं उसे हर कोई जनता है। महतवीय वंदेन योजना, भावना बाहरा न राजनंदगांव लोकसभा : पाण्डेय जी ने भी प्रधानमंत्री

A photograph showing a woman in a white dress standing on a stage, speaking into a microphone. She is surrounded by a large crowd of people, mostly men, who are looking towards her. Some individuals in the crowd are wearing orange sashes or stoles. The setting appears to be an outdoor event or rally.

आवास योजना, किसानों का दो वर्ष का बकाया बोनस, 3100 रुपए प्रति क्लिंटल में धान खरीदी जैसे अपने वादों को पूरा किया गया यही है मोदी जी की गारंटी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा भी किये गए ऐतिहासिक कार्यों को जनता भलीभांति जानती है, 500 वर्षों बाद अयोध्या में प्रभु श्रीराम मदिर का निर्माण कर करोड़ों भक्तों की आशा का सामाजिक कामे का काम

उद्देश का लकर हम जनता के बाच जा रहे हैं और जनसंपर्क के दौरान जनता से हमें अपार समर्थन भी मिल रहा है। प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रत्येक वर्ग एवं व्यक्ति के लिये उनके लिये गए जनहित कार्यों से आज उनके

जीवन में सकारात्मक परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। आवास योजना, उज्ज्वला

योजना, जल जीवन मिशन, किसान सम्पादन निधि जैसे सैकड़ों योजनाओं ने आज उन्हें आर्थिक व मानसिक रूप से समृद्ध बनाने का कार्य किया है इसलिए जनता पुनः भारतीय जनता पार्टी को प्रचंड मतों के साथ जीत दिलाने का संकल्प कर चुकी है।

जात दिलान का सकल्प कर रखा था। कार्यकर्ताओं में भी उत्साह व जोश चरम पर हैं। घर-घर जाकर जनता को जागरूक करने के साथ ही उहें मतदान करने के लिए कार्यकर्ता साथी भी पूरी निष्ठा से अपने दायित्वों को पूरा कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि विषयकी पार्टी के पास कोई विषय नहीं है इसलिए वो जनता को बरगलाने का काम कर रहे हैं और खौबलाहट में अमर्यादित बयान दे रहे हैं। विगत पांच वर्षों में कांग्रेस के शासन में जो बदलावी और अराजकता छत्तीसगढ़ ने देखी है उसका परिणाम 2023 के चुनावों में जनता ने अपने मतदान से दिखा दिया है और जनता फिर से लोकसभा चुनाव में छत्तीसगढ़ की सभी 11 सीटों में भाजपा को प्रचंड जीत दिलाने का संकल्प कर लिया है। आज मोदी जी की गारंटी और विष्णु देव सरकार के नेतृत्व में हम विकसित भारत से विकसित छत्तीसगढ़ के पथ पर अग्रसर हैं और जनता भी इस विकास यात्रा में भाजपा के साथ है।

| | |
|---|-----------------------------|
| लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में | |
| खर गुता | ONLYTDS.COM |
| ITR GST | G.S.T. रिट्वर Food Licence |
| इकम TAX फाईल M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन | TDS रिकंड प्रोजेक्ट रिपोर्ट |
| हमारे TAX Expert आपकी | IT नोटिस डिजिटल सिग्नेचर |
| मदद हेतु तैयार है। | 9300755544, 8878655544 |

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रदीप कुमार जेन द्वारा म.परिवारपाल इडस्ट्रीज, पोस्ट नं. ४२१ सेक्टर-३, निडुक नं.-२ उत्तरायण शहर, रायपुर (छ.ग.) से नुद्रा एवं ज्ञान के पाठ्य, सेक्टर-१, शकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक: प्रदीप कुमार जेन, फोन नं.: ०७७१-४०११९६६, मा.- ९९८१२४२५२ RNLNO.CHINNIN/2013/50554